5

कोंकणी साहित्य

प्रो. रवींद्रनाथ मिश्र

गोवा ने विगत पाँच दशकों से कोंकणी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है। विश्व का प्रमुख पर्यटक स्थल होने के कारण यहाँ विभिन्न भाषा एवं संस्कृति के लोग आते हैं, जिससे लेखन के लिए कुछ मायनों में नई पृष्ठभूमि मिलती है। गोवा की खास बात यह है कि भूमंडलीकरण, सूचना तकनीक, बाजारवाद, मीडिया विस्फोट आदि के प्रभाव के बावजूद यहाँ का हिंदू और क्रिस्ती समाज अपनी जड़ों से जुड़ा हुआ है। आज भी नाटक और तियात्र की परंपरा उसी रूप में विद्यमान है। सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक परिवर्तन के कारण साहित्य की विषयवस्तु, भाव एवं विचार में परिवर्तन आना स्वाभाविक है। हमारे देश में गोवा की मौजमस्ती की संस्कृति को लेकर जिन लोगों के मन में एक अलग धारणा है, उन लोगों ने यहाँ के गाँवों को नहीं देखा है। साहित्य को मूल ऊर्जा तो मूलतः लोकजीवन से मिलती है। यह सही है कि क्रिस्ती समाज का एक बहुत बड़ा समुदाय होने के कारण संस्कृति का वैविध्य है लेकिन यहाँ का अधिकांश क्रिस्ती समाज धर्म परिवर्तित समाज है, इसलिए उनकी मानसिकता में कोई विशेष अंतर नहीं है। इस समाज के ज्यादातर लोग विदेशों में रहते हैं इसलिए वे पाश्चात्य संस्कृति से अधिक प्रभावित हैं। यह बात मूलतः युवा–युवतियों पर लागू होती है।

अभी हाल में ही चेतन भगत ने हिंदी के संवर्धन में रोमन लिपि की बात कही थी। यह उनका अपना निजी विचार हो सकता है क्योंकि यह सर्वमान्य नहीं है। गोवा में भी लिपि को लेकर दो मत हैं। यहाँ के कतिपय क्रिस्ती

समाज के लोग कोंकणी साहित्य को रोमन लिपि में लिखने की बात करते हैं और कुछ लोग लिख भी रहे हैं लेकिन अधिकांश साहित्य देवनागरी लिपि में ही लिखा जा रहा है। हम सभी जानते हैं कि सभी भारतीय भाषाओं में खूब साहित्य लिखा जा रहा है लेकिन पठन-पाठन कम हो रहा है। यह परिवर्तन का स्वरूप है। कोंकणी साहित्य अन्य भारतीय साहित्य की भाँति विभिन्न विधाओं में लिखा जा रहा है।

कोंकणी काव्य

समकालीन कविता मूलतः जीवन के छोटे-छोटे अनुभवों से जुड़ी कविता है जिसमें जीवन के विविध रंग हैं। कोंकणी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर प्रकाश द. नायक का 'कुतल्ल' (गाज) काव्यसंग्रह 'चैतर' और 'कस्तूरगंध' के बाद आया। प्रस्तुत काव्यसंग्रह में कुल छियासठ कविताएँ संकलित हैं। प्रकाश ने अपनी रचनाओं में रोजमर्रा के जीवन संदर्भों के साथ-साथ शृंगारिक भावनाओं की भी अभिव्यक्ति की है।

तुज्या आंगावयली साडी
बीन रंगाची नितळ उदनशी..
हे दीस
पोंदचो तळ सोदपाचे
हे दीस/परतून
दिफळे फोडपाचे...

इसी प्रकार तूं म्हज्यांत पळय, हांव आनी तूं, हांव एक पावस आदि कविताएँ शृंगारिक हैं। इसके अतिरिक्त अन्य कविताएँ विभिन्न भावबोधों और विचारों पर आधारित हैं।

युवा कवयित्री श्रीनीशा नायक ने 'खंय गेली आजी?' (कहाँ गई आजी) 82 पृष्ठों के काव्यसंग्रह में जीवन के निजी अनुभवों को स्वर प्रदान किया है। इसमें उनके सुख-दुख के अनुभव भी विद्यमान हैं।

आजी म्हज्या/अंतरांत आसा
हाची साक्ष म्हळयार

काळजाच्या कोनशांनी
तिचो सासपुपाचो म्हाका
तो अलौकीक जावपी स्पर्श

'आयज म्हाका चोयवंटानी/तुजीच दिसता सावळी/तशीचशी सांज आयली/आयज तुजी याद आयली' पंक्तियों के लेखक जॉन आगियार का "सांज', ए. पी. भानुप्रकाश का 'काव्यव्यहार', जयराम चव्हाण का 'स्मरण तुजे" (मूलतः प्रेम एवं शृंगार संबंधी कविताएँ), पी. एन. शिवानंद शेणै का "नीळ दोळयांची चेली" (नीली आँखों वाली लडकी), आनंदन एन. एन. का "विवेकानंदम", प्रकाश दा. पाडगांवकार का "पुनरार्थोपनिशद" एवं स्वर्गीय एल. नारायण मल्या का "*श्री नारायण काव्यामृत*" नामक काव्यसंग्रह प्रकाशित हुए। 'पुररार्थेपनिशद' में पाडगांवकार ने रवींद्रबाबाक, संभवामि युगे–युगे, सयकाम जाबालाची, तपस्वी शंबुक आदि के प्रति अपने मनोभावों को व्यक्त किया है।

इनके अतिरिक्त अशोक रघुवीर चोडनकार का "पावल्यों", महेस गौविंद का "यादींचे उपाळे", पांडुरंग का "नाझीया", शांखवालकार अनिल कामत का "पासय", पुष्पावती केरकार का "झाम झेम झेमाडो", माया अनिल का "आनालयो गुनालयो", शेख यूसुफ का "ओड", निकिता टी. सिनै का "काव्यमंथन" आदि काव्यसंग्रह 2014 में प्रकाशित हुए। देवनागरी लिपि के अलावा अलमेदा मिनेनो का "हांव तो हांव", डा क्रूज का "चिंतनम आनी सोपनम", डॉअयस गुदलुपे का "नातें", डिनिज मारिनो का "तुजी xokti",
दोउरदो लिनो का "सुदोरेचो बैच पावसाचे राती", इस्तेवेस पीओ का "जीणेच्यो पाकल्लों", फडते जीतेंद्र का "जोगोर", गोमिश लुइस का "लोकलोक्ति किरन्नम" और "शांखवाळकार कामटत अनिल का "मोतयां" काव्यसंग्रह प्रकाशित हुए।

कोंकणी कथा साहित्यः

भारतीय साहित्य की विभिन्न विधाओं में आजकल उपन्यास और कहानियाँ खूब लिखी जा रही हैं। इन दोनों में कहानी लेखन की व्यापकता और बहुलता अधिक है क्योंकि लगभग सभी भाषाओं की पत्रिकाओं में कहानियाँ प्रकाशित हो रही हैं। कोंकणी साहित्य इससे अछूता नहीं है। इस

वर्ष नामवंत कोंकणी साहित्यकार एवं कोंकणी अकादमी के भूतपूर्व अध्यक्ष एन शिवदास का "ओह बाबूश" नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक के मन में गोवा के राजकाज, पर्यावरण, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के प्रति जो एक धारणा और विचार है, उस तरह यहाँ के राजनेता नहीं सोच पा रहे है। लेखक के मन में सुसंस्कृति एवं सुरम्य गोवा के प्रति जो छवि है, उस तरह कुछ नहीं हो पा रहा है। एन. शिवदास के मन में यह कसक है, जिसकी अभिव्यक्ति इस उपन्यास में हुई है। कोंकणी की दूसरी प्रसिद्ध लेखिका मीना काकोडकार का "वास्तू" उपन्यास प्रकाशित हुआ। इसके पूर्व इनके तीन कोंकणी कथा संग्रह, ललित निबंध, बालसाहित्य, अनुदित उपन्यास आदि रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

एस. एच रत्नाकर राव का 'अंजनी' नामक पहला उपन्यास प्रकाशित हुआ। यह इनके बीस वर्ष के सतत् जीवनानुभवों का प्रतिफल है। उपन्यास के पात्रों एवं उनके सामाजिक मन और विचारों का लेखक ने गहन अध्ययन किया है। उपन्यास के संदर्भ में लेखक का कथन है कि "मैं मडगाँव के होटल में रुका। यह धोबी का एक लड़का मेरा कपड़ा लेने के लिए आया। जब वह आ रहा था तो किसी ने उससे पूछा 'इनास आया रे? उसने नीचे देखते हुए कहा "ना" वह बीमार है। उसे आए 15 दिन से अधिक हो गया। उस लड़के ने किसी ने पूछा 'तुम्हारी कौन-सी भाषा है?' उसने कहा 'कोंकणी' लेकिन तुम्हारा तो दो शब्द अंग्रेजी (फिफ्टीन, डेज़) और दो पुर्तुगीज (दुयेंत, मायज) था। इस कोंकणी उपन्यास में संस्कृत, मराठी, इंगलिश, पुर्तुगीज, उर्दू और फ्रेंच का प्रयोग हुआ है। उपन्यास का अर्थ समझना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि उससे आनंद प्राप्त करना।"

प्रसिद्ध कोंकणी लेखक एवं संपादक दिलीप बोरकार का "सखी वसुंधरा', रामनाथ गावडे का "सादु आनी जादूगर महादु", नरेंद्र काशीनाथ कामत द्वारा प्रेमचंद लिखित "मंगलसूत्र" का कोंकणी में अनुवाद, नाटेकर गुरुदास भालचंद्र का "मोड्ड येता टेन्ना" देवनागरी में तथा इनाचियो नोरोन्हा का रोमन लिपि में "पोलिन्छेम गोएम पोरोत केडना मेल्तोलम" उपन्यास प्रकाशित हुए।

हर्षा सदगुरु शेट्ये की '*कथारंग* नामक कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ जिसमें कुल 17 कहानियाँ जीवन और समाज के विविध रंगों की हैं। इस संग्रह के पूर्व इनके 'म्हजी माती म्हजें मळब' (कविता संग्रह), 'जगमा और चला, भारत भोंवुया' बालसाहित्य, 'मोतयांची माळ' ललित निबंध और 'आनंद यात्रा' प्रवास वर्णन की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आपको कई साहित्यिक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। विवेच्य संग्रह की नवें पर्व, कस्टडी, येजमानपण, रितो पोसो..., घुसमट, लग्न, लाइफ इज ब्युटीफुल आदि कहानियाँ जीवन के विविध संदर्भों को रेखांकित करती हैं।

गजानन जोग विगत चार दशकों से कोंकणी कथा साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं। जोग मूलतः हास्य-व्यंग्य लेखक के रूप में जाने जाते हैं। इस वर्ष आपका "*खांद आनी हेर कथा*" नामक कथा संग्रह प्रकाशित हुआ जिसमें खांद, घरप्रवेश, दॉना सिल्विया, दोन दुकां, रीण, जाप, विघटन नामक कुल बारह कहानियाँ संकलित हैं। 22 लघु कथाओं का "*पयण आनी हेर कथा*" नामक एडवीन जे. एफ. डिसोजा का तथा संदीप मणेरीकर का 22 कथाओं का "चव्हाटो" नामक कथा संग्रह प्रकाशित हुए।

पुंडलीक केळेकार की '*मन मोवळाय*' नामक एक साथ तीन विधाओं पर केंद्रित पुस्तक प्रकाशित हुई। इसमें कुवाडें, उमाशेची रात, हुंवारो, चोर, चूक सपन, योंगायोग, गौरी आदि शीर्षक से 13 कहानी और मिलागेचो दोतोर, अडचावट मांय, पिरवळ म्हजो गाँव आदि नाम से 4 ललित निबंध तथा मरण, पेर, वॉटेड, झिंगू, कर्तव्य आदि नाम से 7 अनुसर्जित साहित्य संकलित हैं। नरेंद्र का. कामत का "सुवर्णलता आनी घाडसी राजकुंवर" नामक बालसाहित्य पर आधारित उपन्यास इस वर्ष प्रकाशित हुआ। इसमें द्वापर युग में कौरव और पांडवों के कुल में चंद्रप्रस्थ नगर के राजा धर्मवीर और उनके दुश्मन चित्तपुर के राजा शशांक के बीच की कहानी का जिक्र हुआ है। सामाजिक कार्यकर्त्री, इन्फोसिस फाउंडेशन की अध्यक्षा एवं पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित सुधा मूर्ति के दो अंग्रेजी कहानी संग्रहों का अनुवाद सुनेत्रा जोग ने कोंकणी में "जाण्टेलो आनी ताचो देव" और "हांवे दूद पिवपांचें" नामक शीर्षक से किया।

सुशीला त्रिविक्रम भट का सोद, स्मारक, शुद्धि कलश, साळग्राम, अभयदान, त्तिळोदक आदि शीर्षक से 15 कहानियों का "साळग्राम" नाम से कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ। स्मिता प्रभु की "मूर्तमणीं" और कोंकणी रोमन लिपि में थामस स्टेफेंस की "गोंयचों कथा" नामक पुस्तकें प्रकाशित हुईं।

कोंकणी नाट्य एवं तियात्र साहित्यः

इक्कीसवी सदी में जनसंचार के विभिन्न माध्यमों के विस्फोट के बावजूद गोवा में नाटक और तियात्र की लोकप्रियता कम नहीं हुई है। इसका परिणाम यह है कि कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं में नाटक और तियात्र भी खूब लिखा जा रहा है। प्रकाश द. नायक का *"अस्तुरीः शिमेभायलें मळब"* (नारी का स्वरूप आकाशीय सीमा के बाहर है) नाटक नारी जीवन के उम्र के विविध पड़ावों और उनके स्वरूपों पर केंद्रित है। इसके अंतर्गत शैक्षणिक एवं साहित्यिक जीवन के आधार पर नारी के अधिकार एवं उसके सशक्तिकरण को रेखांकित किया गया है।

कविंद्र फळदेसाय का 26 पथनाट्यों का संग्रह *"सर फुडें"* (आगे बढ़ो) नाम से प्रकाशित हुआ। ये पथनाट्य जीवन और समाज के विविध अनुभवों पर आधारित हैं। गोंय म्हजें (मेरा गोवा), शेणला रे शेणला (खो गया रे खो गया), वंदे मातरम, वोट फॉर, अक्षय ऊर्जा, प्लास्टिक सर्जरी, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, राखणदार भुंयेचे (धरती के रखवाले), सत्यमेव जयते, सूर्यदेवा नमन, महात्मा गांधी आदि शीर्षकों के पथनाट्य संकलित हैं। "परत एकदां" (पुनः एक बार) विकर्ण खांडेपारकार का एकांकी संग्रह प्रकाशित हुआ। इसमें "*हुशार पिशो*" (होशियार पागल), "*परत एकदा*" (दुबारा), "*हॅल्मेट आनी ट्राफीक*" नामक तीन एकांकी संकलित हैं। महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'मेघदूत' का कोंकणी अनुवाद 'मेघदूत' नाम से शांताराम वर्दे वालावलीकार ने इस वर्ष प्रकाशित किया।

महेश चंद्रकांत का "*आवय तिरंगी मम्मी फिरंगी*" बाबा प्रसाद का "*ब्रेकिंग न्यूज*" "*दिसले अपनी फसलें*" और "*फाम्माद*" आदि भी उल्लेखनीय हैं।

इतर कोंकणी साहित्यः

कोंकणी साहित्य में अन्य भारतीय भाषाओं की भांति निबंध साहित्य का लेखन कविता और कथा की भांति बहुत पहले से हो रहा है। वर्तमान दौर में साहित्यिक निबंधों का लेखन कम मात्रा में हो रहा है। इस वर्ष शशिकांत पुनाजी का रोजमर्रा के जीवन के अनुभवों एवं विविध संदर्भों पर केंद्रित 47 निबंधों का "*सामारां सागोती*" नाम से संग्रह प्रकाशित हुआ। "*पुलीस–पुलीस मार पिल्लूक...*" (पुलिस–पुलिस बजाओ सीटी) निबंध में पुनाजी ने लिखा है– "आयज पेडण्यान रिपोर्टर पायलेक पंचवीस। हगललां मूतललां सगळां छापान येता। (आजकल पेडणे में बहुत सारे रिपोर्टर हो गए हैं जोकि हगनी-मूतनी का समाचार भी छापते हैं।) इसी प्रकार उनके अन्य निबंध '*पावस इलो मिर्गाचो*, '*कुत्रो जेचो तेचो*, '*मीड डे मिलांत...*','*धुकर तो धुकर*, '*काय ह्या झीला*, '*हेंचा काय करया* आदि निबंध हैं।

कृ. म. सुखठणकार का 'चिमटे घुमके' (विनोदी ललित) नाम से लेखों का संग्रह प्रकाशित हुआ। यह इनकी पहली पुस्तक है। इनका मानना है कि विनोदी साहित्य लिखना एक कठिन कार्य है। लेखक ने अपने निबंधों में वर्तमान विषयों और संदर्भों को लिया है। उदाहरणस्वरूप "मैं अण्णा हूँ' में अण्णा और केजरीवाल को लेकर व्यंग्य किया गया है। इसी प्रकार चीठ, दीस कोणा कोणाचे, समुंदर में नहा के, दिल मांगे मोर, चलता है, जेथे जातो तेथे, माय त्रापता हांवूय लेखक आदि लेख विभिन्न विषयों पर केंद्रित हैं।

गोवा की महिला कोंकणी रचनाकारों में माया अनिल खरंगटे का नाम जाना-पहचाना है। अभी तक उनका '*कयपंजी*, '*श्रावण शिंवर* नामक दो कविता संग्रह और '*घोंटेर*, '*मळब झेंप*, '*मृगजल*, '*काळीं कुपां रुपेरी देग* नामक चार कथासंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। माया ने इस वर्ष कोंकणी साहित्य की इतर विधा में पत्र लेखन की शुरुआत की है। 2014 में 'प्रीच सखी' नाम से आपका पत्र संग्रह प्रकाशित हुआ है, जिसमें उनके 30 पत्र प्रिय सखी के नाम लिखे गए हैं।

अशोक कामत ने कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं पर लेखन कार्य किया है। अभी तक उनके तीन नाट्यसंग्रह, एक बालसाहित्य, दो कथासंग्रह, एक काव्यसंग्रह, दो नाटक, तीन कादंबरी और अभी इस वर्ष आत्मकथन "*ती जीण, ते खीण*" प्रकाशित हुआ। इसके अंतर्गत उनके एका फोनान जीण बदल्ली, जनगंगा पुरस्कार, वतं वतां आदि नाम से नौ आलेख संकलित हैं। इन लेखों में उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों को जैसे कि एक फोन से कैसे जीवन बदल गया, पुरस्कार की परंपरा एवं उनके उपन्यास '*घणाघाय* का लोकार्पण संबंधी विचारों आदि का उल्लेख हुआ है। संपदा कुकळळकार ने अपनी 'मनाची शक्त' (मन की शक्ति) में 61 लेखों के माध्यम से अपने मनोगत विचारों और भावों को अभिव्यक्ति प्रदान की है। जैसे कि लायफ इज अ मॅटर ऑफ चॉयसेस, सकारात्मक विचार, स्वातंत्र्य, अस्तित्व, कृतज्ञता, अहंकार टाळात आदि लेख संकलित हैं। 'अहंकारी मन हें सगळें वैक्तिक घेता' अर्थात अहंकारी मन सब कुछ व्यक्तिगत स्तर पर ग्रहण करता है।

कोंकणी–मराठी–अंग्रेजी भाषाविज्ञ लेखक, संपादक, अनुवादक, समीक्षक और विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित डॉ. हरिश्चंद्र नागवेंकार की कई कोंकणी पुस्तकें प्रकाशित हैं। आपने इस वर्ष गोवा के जानेमाने स्वतंत्रता सेनानी, कोंकणी–संस्कृत भाषाविद्, अकादमी के संस्थापक अध्यक्ष भूमिपुत्र "*पुरुषोत्तम काकोडकार जिवीत आनी कार्य*" नामक जीवनी की पुस्तक प्रकाशित की। इसके अंतर्गत उन्होंने काकोडकार के जन्म परिचय से लेकर शिक्षा एवं कार्यक्षेत्र का संपूर्ण विधिवत चित्रण किया है। नागवेकार ने काकोडकार के राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक आदि बहुमुखी व्यक्तित्व का बखूबी चित्रण किया है।

कोंकणी की सुप्रसिद्ध लेखिका नयना का "*आफो*" ललित निबंध संग्रह दो कविता संग्रह, 13 बालसाहित्य, एक निबंध और एक कथा संग्रह के बाद प्रकाशित हुआ। सुमेधा कामत देसाय अपने प्रवास वर्णन, ललित निबंध एवं विनोदी कोंकणी साहित्य आदि के लेखन में अग्रसर हैं। इस वर्ष

आपका "आबाडयाच्या घरांत" ललित निबंध संग्रह जो मूलतः सामाजिक, लोक एवं सांस्कृतिक जीवन पर आधारित है, प्रकाशित हुआ। "गोंयचें खतखतें" नामक दिलीप काबाडी का लघु निबंध संग्रह भी प्रकाशित हुआ।

गोवा में रघुनाथ मंगेश धुमे ने एक इंजीनियर के रूप में आजीवन कार्य किया। इस दौरान उन्हें अपने पेशे से जुड़े अनेक अनुभव प्राप्त हुए। "*वाट अजून चलती आसा...*" (रास्ते आज भी चलने की आशा से प्रेरित होते हैं) में इसी संदर्भ में उन्होंने अपने जीवन पथ के अनुभवों को वाणी प्रदान की है।

माणिकराव राम नायक गावणेकार ने स्वामी विवेकानंद के '*भक्तियोग* और '*कर्मयोग* की मूल अंग्रेजी भाषा की पुस्तक का कोंकणी में अनुवाद किया है। इसमें विवेकानंद द्वारा शिकागो में विश्वधर्म सम्मेलन में दिए गए भाषण का विशेष रूप से उल्लेख है। इसके साथ ही धर्म, कर्म और भक्ति से संबंधित उनके अमूल्य विचार व्यक्त हुए हैं। कोंकणी भाषी जनता को इस पुस्तक के माध्यम से स्वामी विवेकानंद एवं उनके विचारों को अच्छी तरह जानने का सुअवसर प्राप्त होगा। विभिन्न रोगों के उपचार संबंधी जानकारी के लिए डॉ. अर्चना गांवकार की "*दुयेंसां आनी आयुर्वेदीक उपचार*" तथा गोवा के विभिन्न क्षेत्रों में ख्यातनाम 21 कलाकार एवं 09 जानेमाने कोंकणी साहित्यकारों के जन्म, कार्य एवं उनके योगदान से संबंधित "*गोंयचीं माणकां*" नामक पुस्तक प्रकाशित हुई।

पत्र-पत्रिकाएँ

गोवा में कोंकणी और मराठी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है, लेकिन अधिकांश कार्यालयीन एवं शैक्षणिक कार्य अंग्रेजी भाषा में संपन्न होता है। मराठी यहाँ की पहले से महाराष्ट्र के प्रभाव के कारण शैक्षणिक और सांस्कृतिक भाषा होने के कारण कतिपय मायनों में मराठी का वर्चस्व दिखाई देता है। जैसे कि यहाँ अधिकांश समाचार–पत्र मराठी और अंग्रेजी में प्रकाशित होते हैं। कोंकणी में एकमेव दैनिक पत्र '*सूनापरांत* प्रकाशित होता है। अब धीरे-धीरे कोंकणी भाषा का सवाल यहाँ की अस्मिता से जुड़ गया है इसलिए कोंकणी भाषा और साहित्य का अध्ययन और बोलबाला बढ़ रहा

। शैक्षणिक स्तर पर मराठी की अपेक्षा कोंकणी का वर्चस्व है जबकि यहाँ अन्य भाषा-भाषियों की संख्या भी काफी मात्रा में है। यहाँ कोंकणी की लब्धप्रतिष्ठित मासिक पत्रिका "*जागृ*" डॉ. माधवी सरदेसाय के संपादन में नियमित प्रकाशित होती थी, किंतु दो-तीन महीने पूर्व उनका क्षयरोग के कारण असामयिक निधन होने से पत्रिका का प्रकाशन अभी तक नहीं हुआ है। माधवी के निधन से कोंकणी भाषा और साहित्य की अमूल्य क्षति हुई है।

कोंकणी की दूसरी नियमित पत्रिका '*बिंब*' दिलीप बोरकार के संपादन में प्रकाशित हो रही है। इसमें जाग की भांति कोंकणी, कविता, कहानी, लेख, समीक्षाएँ, जीवनी, संस्मरण आदि विधाओं का प्रकाशन होता है। इसके अलावा श्री तुकाराम शेट 'कोंकण टायम्स' और गोकुलदास प्रभ '*ऋतु*' नामक त्रैमासिक पत्रिका का संपादन नियमित रूप से कर रहे हैं। कुळागर, जैत, उर्बा, बारदेश, चवथ, युवांकुर आदि नियमित-अनियमित पत्रिकाएँ छप रही हैं।

पुरस्कारः

गोवा में कोंकणी भाषा एवं साहित्य के संवर्धन हेतु गोवा कोंकणी अकादमी एवं अन्य संस्थाएँ यहाँ के कोंकणी साहित्यकारों को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित करती हैं। इसके अतिरिक्त साहित्य अकादमी नई दिल्ली प्रत्येक वर्ष कोंकणी के रचनाकारों को सम्मानित करती है। इस वर्ष कोंकणी में साहित्य का अकादमी पुरस्कार डॉ. माधवी सरदेसाय को उनकी सर्जनात्मक निबंध पुस्तक "*मंथन*" के लिए मरणोपरांत प्रदान किया गया। पांडु गावडे को साहित्य अकादमी का अनुवाद पुरस्कार लक्ष्मणराव गायकवाड़ के मराठी उपन्यास "उचल्या" के कोंकणी अनुवाद पर दिया गया।

❑❑❑